TECHE
UDINE

MANOSCRITTI

FONDO PRINCIPALE

Manoscritto n. **P_MSS_4338**

Nel Fondo Principale sono confluiti la maggior parte dei lasciti manoscritti pervenuti alla Biblioteca Civica «Vincenzo Joppi» nel corso del tempo: si tratta perciò di un fondo composito nel quale è possibile trovare manoscritti di argomento liturgico, scientifico, giuridico, botanico e altro.

Collocazione:

Biblioteca Civica "Vincenzo Joppi", Udine
https://www.techeudine.it/fondo-principale
https://www.sbhu.it/

॥६०॥ श्रीजिनायनमः॥ नरकको चोढाल्यो लिख्यते॥ सिद्धस्कंधदायक सांभलो
॥ श्रीपद्मप्रभुसांमि॥ नरकांमइं नीवुरथकइ॥ मइं सह्यादुखअंनंम॥१॥ सर
ववातसंसारनी॥ जाणइ तूंजगदीस॥ तोपिणतुझआगलिकहुं॥ एगेलग १
इसीस॥२॥ ढाल चितचेतनकरीयद्धनी॥ सातेनरकेवेदनारे॥ येवतणीअ
तिघार॥ दीनहीनदुखीयइथकइ॥ मइसहीयअनंतीवारोरे॥१॥ जिनवरसां
भलो॥ कहतांनावेपारोरे॥ जिनजीमयाकरो॥ जिमछूटुंहं इणघारोरे॥२॥
जिनवरसांभलो॥ उष्णसीतनीआकरीरे॥ वेदनविषमविरूय॥ रीराणाकर
तेसहीरे॥ एमीयेडघनेरूपोरे॥३॥ जिन०॥ कोकोइ तिहांथीकाढिनइरे 1
॥घालैअगनिमझार॥ धमणिमुखइंवलिजेधमइरे॥ तोनीदआवइनिर

धरोरे ॥ ४ ॥ जिन ॥ एहवीवसनतणीसहीरे ॥ वेदनाअनंतअनूप ॥ सी
त तणीयणिजेसहीरे ॥ तेहनोनावुंसरूपरे ॥ ५ ॥ जिण ॥ तातोलोहतणी २
कीयोरे ॥ सहसताररएरिमांण ॥ गोलोजाइतिहांववैरे ॥ तोहीवेनीरस
मांनोरे ॥ ६ ॥ जिण ॥ सकलतोजनसंसारनारे ॥ कोईकरावेसार ॥ ए
धतोहीसाजेनहीरे ॥ एहवीक्षुधाकडअपारोरे ॥ ७ ॥ जिण ॥ असंख्याता ॥
समुद्रांतणोरे ॥ पाणीपावइकोइ ॥ तोपिणकंठसूकोरहैरे ॥ एहवीतृषाग
होहोयोरे ॥ ८ ॥ जिण ॥ छाजितणीवेदनतिहांरे ॥ नारकीयांनेंदेह ॥ बोलेबु
रीसुंघामझीरे ॥ तोपिणनमिटइतेहीरे ॥ ९ ॥ जिण ॥ समोकलेवरसापणै
॥ गाइकलेवरजेम ॥ एहथीअनंतगुणीतिहांरे ॥ आवेदुरगंधसीमोरे ॥ १

२

१० ॥ जिण ॥ अवधिविभंगज्ञानेकरीरे ॥ देषीआवतोछरका ॥ सयकवि
सागोकंपतोरे ॥ तिलतरितनलेयोसारकोरे ॥ ११ ॥ जिण ॥ तापदाहनय
शोकनेरे ॥ आदिदेईनइअनंत ॥ वेदनजेमेतिहांसहीरे ॥ तेहमोन २
वेअंतोरे ॥ १२ ॥ जिण ॥ [illegible]
[illegible] तिहांसहीरे ॥ हालनांन्हानाहवीरे ॥ हिवअन्यान्य
न अनुतवीरे ॥ वेदन विषमकराल ॥ जिनवरसांभलजो ॥ सूरतणी
परिकुरमांरे ॥ वडोलोहीनाषाल ॥ जिनपरे[illegible]ऊपनारे ॥
पृथ्वीविकारहथियार ॥ जिन ॥ मोगरमूंसलषकरे ॥ कीयाअ
त्योन्यप्रहार ॥ जिण ॥ १३ ॥ छुरीकटारीचकरसुरे ॥ बियाअंगोपांग ॥ जि

नय । लोहथा गि वाणिकरीरे । बांधी सगलो अंग ॥ जिव ३ ॥ सांभीतो मर
सुं रूकि मिड्रे । सां जिकीयो लकलूर । जिव । फरसी करसी स्युं सहीरे । वी
धगोतरपूर । जिव । ४ ॥ डाभरि सुधमे टूटिनै रे ॥ शरीर कूओ सि । तष्म
। जिव । वेदन राते वाल्योबक्यारे । पमीयो कंथि रनई कुंभ ॥ जिव । ५ । मार
तानै जिम मांमीयारे । मछि छाकरे उकार । जिव ॥ तिम कुंति हाय मीया
यकारे ॥ वि मंथो अनंतीवार ॥ जिव ६ । ब्रहरण विनापिणवेदनारे
कायडाई अ समांन । जिव । दांते दाढे करि वलीरे । चुंट्या नाक नै कांन । जि
व । ७ ॥ नयन वारू पंषीयडा विनैरे । कोधई करि विकराल । जिव । रोइ
धोनमई निलरहारे । ज्ञाम्यि कुमि कीयो अंजाल । जिव । ८ ॥ छिन्नपरमा २

धामी तणीरे ॥ वेदन अनुगतीकेह ॥ जिव ॥ [illegible] सुरे । डसमु
दाधीदेह ॥ जिव ॥ ९ ॥ ढाल कोइलो परबत धूंधलो रे लो ए देशी ॥ परमाधामी
पापीयां रे लो ॥ दीधा दुख अनंत रे ॥ जिव सर ॥ कहतां पकणिडी नस्कं रेलो २
॥ कहो किम आवे अंतरे ॥ जिव ॥ १ ॥ परव ॥ पहिलो अंबनामइ अबेरेलो ॥ प
रमाधामी अवंभरे ॥ जिव ॥ वाखीलिनइ शरीर नारेलो ॥ स्मक्का करै त्रितव
फरे ॥ जिव ॥ २ ॥ परव ॥ टुकटालिनेलइ तलै रेलो ॥ कूको अंबरीष हूक्करे ॥
जिव ॥ सांमनां मइ तीक्षा सहीरेलो ॥ कूटै रांदू सूळवरे ॥ जिव ॥ ३ ॥ पर
व ॥ आंतडियां काढइ कालजोरेलो ॥ नांमे सबलकहूरे ॥ जिव ॥ फरसी
बरछी त्रिसूल मइ रेलो ॥ [illegible] रु कूमहूदरे ॥ जिव ॥ ४ ॥ ५० ॥ मोगर मोटोले 3

इनइरेलो॥ सांडै ऋं आ उघांगरि॥ छिय॥ ठहउपरी इनामसुं रेलो॥ सातमानो दि
वसंगरे॥ छिय॥ ५॥ पय॥ सुलमीन इंतफवोकरइरेलो॥ कालनामइंविकरा
लरे॥ छिय॥ छिलवंतावलिइमकढैरेलो॥ मूढलोयायसंतालरे॥ छिय॥ द
पय॥ मांसशरीरनोचूंटनइरेलो॥ तक्षणक रावेछंमरे॥ छिय॥ पाछिलेसव
पमूं आतणोरे॥ प्राषीनेदसोदंमरे॥ छिय॥ ७॥ पय॥ आवमीइणायरिषोलसो
रेलो॥ देवेअनंताडुरवकरे॥ छिय॥ नवमो असिनामइ ढिवैरेलो॥ नदीयेतिल
तरिसुकरवकरे॥ छिय॥ ८॥ पय॥ धनुंआकारइंधानमारेलो॥ डंगरेवेइसाहुकु
रे॥ छिय॥ मवारचीनीचइसहीरेलो॥ कताराषइदूकरे॥ छिय॥ ९॥ पय॥ पांव
नाषीतिलतिलकरइरेलो॥ सरीरसडूतेसदीवरे॥ छिय॥ ...डइअं

२

गनइरेलो॥ सुंतुंणमीरीवरे॥ छिय॥ १०॥ पय॥ कुमामइदअमोअवैरेलो॥ वे
दइनाकनइकांनरे॥ छिय॥ अरधचंदबांणेकरीरेलो॥ मांहाकरमअ
समांनरे॥ छिय॥ ११॥ पय॥ कंतीयाकमांहिपचैरेलो॥ नरमाहेतेनिलारे॥ छि
य॥ असुरकुमारइग्यामोरेलो॥ कंतनामइकरिसत्यारे॥ छिय॥ १२॥ पय
॥ पंचसैडोयणकउछलोरेलो॥ कंचोगयोआकाशरे॥ छिय॥ पमतांवि
चमइंपंषीयांरेलो॥ चुंटीकीधेनासरे॥ छिय॥ १३॥ पय॥ वलतीविल. वि
ऊविनइरेलो॥ वज्रसरीषीकवीररे॥ छिय॥ सकेविशाछिमसासता
रेलो॥ वालुकअसुरसडीररे॥ छिय॥ १४॥ पय॥ लो..हीराधिकधीरसुं
रेलो॥ सरीवेतरणीकांपारे॥ छिय॥ ...कलकरतीनदीवहैरेलो॥ तेह

4

तराबह्नतांगिरि॥ जि०॥ २४॥ ए०। वैतरणीनांमइ जावइरेलो। तेरमो असु
र कुमार रे॥ जि०। दिवचवदमइरस्वरतणोरेलो॥ आवु समलोआचारे
॥ जि०॥ २५॥ ए०। वज्रतणोकांटेकरीरे। वीहोसामलीवृक्षरे॥ जि०॥ चिर
चीपोवेषोचडवलीरेलो। कामिबालीवक्षरे॥ जि०॥ २६॥ ए०। महाघोषनांमे
सहीरेलो। परमाधामीदेवरे। जि०। टोरल्यावेलाडतांनलगीरेलो। वेदनी
पहवइटेवरे॥ जि०॥ ए०॥ २७॥ ढालघातुणमानामीतनी॥ जिणवरडी
हो गिणतांनावइरेगांन। वेदनछेदनबहवली॥ जिनवरडीहो। पाती
अगनिसमांन॥ तनसुंचेपइकृतली॥ २॥ जि०। रमीटोलूंबांरामिपि। परस्त्र ६
रसुं बूरवसवड॥ जि०। फलतेहनोतेहचाषि॥ सुधीअसुहकरमोवे॥ ३॥

जि०॥ जीवांमेदिईसंघ। आममिघ्रकीअतिघ्राकरो॥ जि०। छेदेहलिमका
रि। फलकहेसुरवयापरो॥ ३॥ जिन०॥ पम अनंतीरेवार॥ दुखसहीयामैं
दुषीयै॥ जि०॥ आपकमायारेकर्म॥ दूषणआरसेकिमदीयै॥ ४॥ जि
०। लहोमानवअवतार॥ इणदूषमपांचमेंआरै॥ जि०। नपलेचारित्र
सूद्ध॥ जिणथीभरजलसमुद्रतरइ॥ जि०॥ ५॥ वाचतांसूत्रसिद्धांत॥ ज
पडेवैरागअतिआकरो॥ जि०॥ तिणनरहइथिररंग॥ वीहूमंकोडि
भवानरो॥ ६॥ जि०। तिणछेनगतिअनेग॥ जकऊपरिमाहरीसही॥
जि०॥ जकऊपरियरनीति॥ निश्चलमनिमाहरेरही॥ ७॥ जि०॥ तेबइ 5
दीनदयाल॥ संगराचलडुषीयांनणाउ॥ जि०। तारकविरुदसंभालि॥

तारिज्यो जसकै घणो ॥ ८ ॥ कलस ॥ इम नगर सांगानेर मझ करहेन
महिमा दिन दिन इ ॥ संवत सतरै सै पइंसठै चैत्र वदि वार ससि दिने ॥
वाचक लक्ष्मीसमुद्र सदगुरु कपूरविजय तस सीस ए । वीनव्यो पदम
प्रभु जिणेसर राजसी रूडा गीस ए ॥ ९ ॥ सर्वगाथा ॥ ५७ ॥ इति श्री
नरकको चोढालो राजसोम कृत समाप्त श्रीरस्तुः ॥ ॥
लिषतं पं. रुजुससोमेन ॥ श्री सांगानेर मध्ये ॥ संवत् १७६६ वैशाष सु
दि ८ दिने ॥ सुश्राविका ॥ उनाश्राविका ॥ प्यारमदेजी ॥ वाचनार्थं ॥